P.G.
SEM-II
Paper - 9

महामाया का चरित्र चित्रण

डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखित 'बाणभट्ट की आत्मकथा' शीर्षक उपन्यास में भट्टिनी, निपुणिका, महामाया, सुचरिता आदि अनेक नारी पात्र आएं हैं। इन पात्रों में महामाया एक सम्भ्रान्त नारी पात्र हैं। जो उपन्यास की मुख्य कथा से संबद्ध न होते हुए भी अपने व्यक्तित्व से मुख्य कथा एवं पात्रों को प्रभावित करती है। औपन्यासिक कथा को ओजपूर्ण और सोद्देश्य बनाने में इसका सर्वाधिक योगदान है।

तंत्र साधिका - उपन्यास के प्रारंभ में महामाया एक तंत्र साधिका भैरवी के रूप में प्रकट होती है जो अघोर-भैरव नामक तांत्रिक की शिष्या है। लेकिन महामाया अघोरभैरव की वाग्दत्ता (मंगेतर) थी किंतु अपहरण हो गया था। इसके बाद महामाया को कुक्षुत देश की राजकुमारी बताकर मौखरि-राज विग्रहवर्मन से विवाह करा दिया जाता है। लेकिन राज-महलों में रहकर भी महामाया ने कभी स्वयं को रानी नहीं समझा और न राजा से संबंध रखा। महामाया ने सच्चाई से विग्रहवर्मा को अवगत करा दिया। फलत: रानी होते हुए भी महामाया पूर्णत: विरागिनी बनकर रहती थी। इसका वाग्दत्त पति भी विरक्त होकर तंत्र साधक बन गया था। एक दिन राजा विग्रहवर्मा को बताकर महामाया ने भी राजकीय वस्त्राभूषण उतार दिए और भैरवी बनकर अपने वाग्दत्त पति अघोरभैरव के पास धूम्रागिरि जा पहुंची। इस प्रकार महामाया ने पूर्णत: वैराग्य ग्रहण कर लिया और सन्यासिनी हो गयी।

त्रिपुरभैरवी रूप - सन्यास ग्रहण करने के बाद महामाया के चरित्र में अद्भुत परिवर्तन होता है। चंडीमंडप के बाहर सूर्योदय काल में बाणभट्ट से महामाया की जब प्रथम साक्षात्कार हुआ, तब महामाया साक्षात त्रिपुरभैरवी के रूप में दिखती है। इसके एक हाथ में त्रिशूल है और दूसरे में काला सा कोई पात्र। खुले हुए पिंगल वर्ण के केश गुल्फों तक लटक रहे थे मानो सायंकालीन अरुण मेघमंडल में विद्युत की शिखाएं अचंचल होकर रुक गयी हों। इसका सुनहरा मुखमंडल गैरिक वस्त्रों से आभूषित था। इसकी आँखों में तेज वर्तमान था। महामाया के व्यक्तित्व में स्त्रीत्व की अपेक्षा पौरुष अधिक दीखता है। इसमें भैरवी के सभी लक्षण परिलक्षित हैं।

राष्ट्रप्रेम — महामाया के चरित्र में राष्ट्रप्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ है। अपने ओजस्वी भाषण से वह आम जनता में क्रांति की भावना उत्पन्न कर देती है। महामाया जब राष्ट्र पर संकट के बादल घुमड़ते देखती है तब प्रचंड ज्वाला बन जाती है। हर्षवर्धन के युग में भारत देश यद्यपि स्वतंत्र था किन्तु अनेक राजे रजवाड़ों में विभक्त होने के कारण देश एकता के सूत्र में जुड़ा हुआ नहीं था। चारों ओर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक अशांति का वातावरण व्याप्त था। फलतः देश की सीमाओं पर कभी आक्रमण होने की संभावना व्याप्त थी। बाह्य आक्रमणों से बचने के लिए देश का एकजुट होना आवश्यक था। किंतु शासकों की स्वार्थलिप्सा की भावना इसमें बाधक था। इसी परिप्रेक्ष्य में अघोरभैरवी महामाया देश के नवयुवकों को संगठित करने का बीड़ा उठाती है और नवयुवकों को ललकारते हुए कहती है — अमृत के पुत्रों मृत्यु का भय माया है, राजा से भय दुर्बल चित्त का विकल्प है। प्रजा ने राजा की सृष्टि की है। संगठित होकर म्लेच्छवाहिनी का सामना करो देवपुत्रों और महाराजाधिराजों की आशा व्यर्थ है। समस्त उत्तरापथ के भाग्य तुम्हारे हाथ में है। स्पष्ट है महामाया नवयुवकों से देश की रक्षा करने के लिए शहीद होने का आह्वान करती है। इसकी दृष्टि में राजा के आदेश की प्रतिक्षा नवयुवकों को नहीं करनी है क्योंकि देशभक्ति के मार्ग में किसी के आदेश की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसलिए भय त्यागकर न्याय धर्म एवं सत्य की प्राप्ति हेतु आगे बढ़ना होगा तभी विजय की प्राप्ति होगी।

मातृत्व → महामाया में भारतीय नारियों की तरह मातृत्व अर्थात् ममता का गुण पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। बाणभट्ट को प्रारंभ में महामाया दुत्कारती अवश्य है परंतु कुछ समय बाद उसे बेटा कहकर बड़े स्नेह से पुकारती है। इसी प्रकार भट्टिनी को भी वह बिटिया कहकर संबोधित करती है। बाणभट्ट महामाया की ममता भरी गोद के सुख को भुला नहीं पाता है। वह कहता है — आनंद भैरव के इशारे पर महामाया ने मेरा मस्तक स्पर्श किया। मुझे ऐसा लगा कि मानो अमृततूलिका से किसी ने मेरे सारे शरीर को विलिप्त कर दिया हो। आनन्दभैरवी ने मेरा सिर धीरे-धीरे अपनी गोद में ले लिया। मेरी सारी जड़ता पल भर में समाप्त हो गयी। मेरी आँखें खुल गयीं तब भी मेरा मस्तक भैरवी

DATE : / /

की गोद में था। मैंने अभीभूत की भाँति कहा- अपराध क्षमा हो अंब! आज मैं कृतार्थ हूँ। --- बाणभट्ट ने बचपन में ही अपनी माता की गोद खो दी थी। पिता का सुख भी बाणभट्ट बहुत दिनों तक नहीं देख सका था। फलत: आनन्द भैरवी महामाया का स्नेहिल स्पर्श से बाणभट्ट बहुत प्रभावित होता है।

सच्ची साधिका - महामाया एक सच्ची साधिका है। कौलतंत्र की साधना का पूरा और सम्यक ज्ञान भी उसे है। पुरुष और स्त्री के विषय में परा-का जो विचार महामाया ने रखे हैं वे बड़े तर्कसम्मत हैं, ठोस और विचारणीय हैं। महामाया की दृष्टि में पुरुष का सत्य ही नारी का सत्य भी नहीं होगा। लेकिन दोनों एक दूसरे के पूरक भी हैं। महामाया का कथन है - "पुरुष वस्तु विच्छिन्न भावरूप सत्य में आनन्द का साक्षात्कार करता है, स्त्री वस्तुपरिस्थिति रूप में रस पाती है। पुरुष नि:संग है स्त्री आसक्त। पुरुष निर्द्वंद्व है स्त्री द्वंद्वोन्मुखी है, पुरुष मुक्त है स्त्री बद्ध है।

Teacher's Signature ______

DATE : / /

पुरुष स्त्री की शक्ति को समझकर ही पूर्ण हो सकता है पर स्त्री, स्त्री को शक्ति समझकर अधूरी रह जाती है। स्पष्ट है पुरुष शिव है तो नारी शक्ति। पुरुष नारी के सहयोग से शक्ति पाकर पूर्णता ग्रहण कर लेता है किंतु नारी स्वयं को शक्ति समझने के भ्रम में शक्ति का अवतार होते हुए भी अधूरी रह जाती है। आशय यह है कि पुरुष और नारी एक दूसरे को शिव और शक्ति समझकर पारस्परिक सहयोग से पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि महामाया का जीवन विवादग्रस्त है। इसका चरित्र औपन्यासिक कथाधार को बहुत गहरे तक न केवल स्पर्श करता है बल्कि अतिशय रूप में प्रभावित भी करता है। प्रायः सभी औपन्यासिक पात्र इसके व्यक्तित्व से प्रभावित दिखते हैं। महामाया की भूमिका साध्वी के रूप में इस उपन्यास में वर्तमान है लेकिन अपने अप्रतिम व्यक्तित्व, ओजस्विता और विलक्षणता के कारण सदैव स्मरणीय है।

Teacher's Signature ________